Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Refereed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-2; Issue-2 (April-June) 2026
Page No.- 04-06

©2026 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

Dr. Elizabethi
Assistant professor,
Mizoram Hindi Training College.

Corresponding Author :

Dr. Elizabethi
Assistant professor,
Mizoram Hindi Training College.

मिज़ोरम में हिंदी की स्थिति : चुनौतियाँ और संभावनाएँ-भाषा, वातावरण और शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में एक विचारपूर्ण अध्ययन

प्रस्तावना : भारत बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है, जहाँ प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट भाषायी पहचान है। उत्तर भारत में हिंदी जनभाषा के रूप में सहज रूप से प्रयुक्त होती है, जबकि पूर्वोत्तर भारत—विशेष रूप से मिज़ोरम—में भाषायी स्थिति भिन्न दिखाई देती है। मिज़ोरम में सामाजिक जीवन, शिक्षा व्यवस्था और प्रशासन मुख्यतः मिज़ो और अंग्रेज़ी भाषा पर आधारित हैं। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि—जब हिंदी राष्ट्र की संपर्क भाषा है, तो मिज़ोरम में उसका विकास अपेक्षाकृत सीमित क्यों है?

यह लेख इसी प्रश्न के उत्तर की खोज करते हुए मिज़ोरम में हिंदी की वास्तविक स्थिति, उससे जुड़ी चुनौतियों तथा संभावित समाधानों पर प्रकाश डालता है।

1. भाषा और वातावरण का गहरा संबंध : भाषाविज्ञान का एक स्थापित सिद्धांत है कि—भाषा पुस्तकों से नहीं, बल्कि वातावरण से सीखी जाती है।

बच्चा वही भाषा सहज रूप से सीखता है—
जिसे वह घर में सुनता है
जिसे वह समाज में सुनता है
जिसे वह दैनिक जीवन में प्रयोग करता है

मिज़ोरम में यह वातावरण हिंदी के पक्ष में नहीं है।
घर में मिज़ो भाषा बोली जाती है
विद्यालयों में अंग्रेज़ी माध्यम प्रभावी है
सामाजिक जीवन में हिंदी का प्रयोग अत्यंत सीमित है

उदाहरण 1 : Vairengte और Champhai : Vairengte क्षेत्र के लोग सामान्यतः थोड़ा-बहुत हिंदी समझ लेते हैं, क्योंकि यह Silchar

के निकट है, जहाँ हिंदी का प्रयोग अधिक होता है।
इसके विपरीत Champhai, जो दूरस्थ सीमा क्षेत्र है, वहाँ हिंदी का प्रयोग लगभग नहीं होता।
इससे स्पष्ट है कि भाषा का ज्ञान क्षमता नहीं, बल्कि वातावरण पर निर्भर करता है।

उदाहरण 2 : Army Camp और भाषा संपर्क : मेरे गाँव में पहले Army Camp था। उस समय हिंदी संवाद की भाषा बन गई थी—दुकानदार, बच्चे, आम लोग—सब हिंदी बोलने लगे थे।
लेकिन Army Camp हटने के बाद हिंदी का प्रयोग भी कम हो गया।
यह सिद्ध करता है कि—भाषा का विकास उसके प्रयोग पर निर्भर करता है।

2. शिक्षा व्यवस्था में हिंदी की सीमाएँ :

मिज़ोरम की वर्तमान शिक्षा प्रणाली हिंदी के विकास के लिए अनुकूल नहीं है।
हिंदी केवल कक्षा 5 से 9 तक पढ़ाई जाती है
कक्षा 9 और 10 में हिंदी केवल एक वैकल्पिक (Optional) विषय के रूप में शामिल है
कक्षा 10–12 में हिंदी विषय की निरंतरता नहीं है
सभी विषय अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ाए जाते हैं
अंग्रेज़ी Nursery से ही प्रमुख माध्यम बनी रहती है
इस स्थिति में हिंदी—
न तो मुख्य विषय बन पाती है
न ही व्यवहारिक भाषा बन पाती है
फलस्वरुप, छात्र हिंदी को केवल परीक्षा के लिए पढ़ते हैं, न कि जीवन की भाषा के रूप में अपनाते हैं।

3. अभ्यास और आत्मविश्वास की कमी :

भाषा अधिगम का मूल सिद्धांत है—Practice makes language perfect.
लेकिन मिज़ोरम में—
हिंदी बोलने के अवसर नहीं मिलते
हिंदी सुनने का वातावरण नहीं है
हिंदी में सोचने की आदत विकसित नहीं होती
परिणामस्वरुप, विद्यार्थियों में यह धारणा बन जाती है कि हिंदी कठिन है, जबकि वास्तविक समस्या अभ्यास की कमी है।

4. एक महत्वपूर्ण संभावना : Hindi Medium School : यदि मिज़ोरम में एक भी Hindi Medium विद्यालय स्थापित किया जाए, तो यह ऐतिहासिक कदम हो सकता है।
जब बच्चे—
Nursery से Class 12 तक
सभी विषय हिंदी माध्यम में पढ़ेंगे
तो हिंदी—
केवल विषय नहीं
बल्कि सोचने और व्यक्त करने की भाषा बन जाएगी
जैसे—
Bengal में Bengali Medium

Tamil Nadu में Tamil Medium
Mizoram में Mizo/English Medium
उसी प्रकार Hindi Medium भी संतुलन स्थापित कर सकता है।

5. शिक्षक को दोष देना : एक गलत दृष्टिकोण : अक्सर कहा जाता है—
"हिंदी शिक्षक अच्छे नहीं हैं।"
यह दृष्टिकोण गलत है।
वास्तविकता यह है—
शिक्षक केवल 40–45 मिनट पढ़ाते हैं
भाषा के लिए 24 घंटे का वातावरण आवश्यक होता है
इसलिए समस्या शिक्षक नहीं, बल्कि संपूर्ण भाषायी वातावरण है।

6. सुधार के व्यावहारिक उपाय : हिंदी के विकास के लिए निम्न कदम प्रभावी हो सकते हैं—
Hindi Medium विद्यालयों की स्थापना
कक्षा 1–12 तक हिंदी को वैकल्पिक रूप से उपलब्ध कराना
हिंदी दिवस, नाटक, वाद-विवाद, कविता-पाठ
ICT आधारित शिक्षण— DIKSHA, e-Pathshala, YouTube आदि।

निष्कर्ष : मिज़ोरम में हिंदी की स्थिति किसी विरोध या अक्षमता का परिणाम नहीं है, बल्कि भाषायी वातावरण की कमी का परिणाम है।
Vairengte–Silchar की निकटता, Champhai की दूरी, और Army Camp के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि—
भाषा का विकास पहले वातावरण में होता है, पुस्तकों में बाद में।
यदि योजनाबद्ध रूप से हिंदी का वातावरण बनाया जाए, तो आने वाली पीढ़ी हिंदी को आत्मविश्वास के साथ सीख सकेगी।
यह न केवल हिंदी का विकास होगा, बल्कि मिज़ोरम के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नए अवसरों का द्वार भी खोलेगा।

संदर्भ सूची (References) :

1. National Education Policy 2020, Ministry of Education, Govt. of India.
2. Right to Education Act 2009.
3. NCERT (2005). National Curriculum Framework.
4. DIKSHA Portal.
5. e-Pathshala, NCERT.
6. Sociolinguistics के सिद्धांत।
7. Fishman, J.A. (1972). Language and Nationalism.
8. Krashen, S. (1982). Second Language Acquisition.
9. Cummins, J. (2000). Language, Power and Pedagogy.
10. Mizoram Board of School Education (MBSE) दस्तावेज़।

•